सत्तामीमांसा (चार्वाक दर्शन)

Ontology

TDC-I. & Sub.

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

चार्वाक दर्शन ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में प्रत्यक्षवादी, तत्त्वमीमांसा के क्षेत्र में भौतिकवादी तथा आचारमीमांसा के क्षेत्र में सुखवादी है। यह जड़वाद की प्रतिष्ठा ही नहीं करता बल्कि अध्यात्मवाद का खण्डन भी करता है। जहाँ तक ईश्वर सम्बन्धी विचार की बात है तो चार्वाक ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करता और ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने हेतु दिए गए तर्कों को खण्डित करता है और कहता है ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। ईश्वरवादी लोग ईश्वर को परम सत् या परम तत्त्व मानते हैं। ईश्वर सत्–चित्–आनन्द होता है। वह स्वतंत्र, निरपेक्ष तथा नित्य होता है. वह अनादि और अनन्त होता है। ईश्वर इस जगत् का जन्मदाता, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता होता है। किन्तु चार्वाक दर्शन में ईश्वर का कोई अस्तित्व ही नहीं माना गया है और इसके लिए चार्वाक निम्न कारण बताता है–

क. प्रत्यक्ष से ईश्वर का ज्ञान नहीं होता

चार्वाक दर्शन के अनुसार उसी की सत्ता हो सकती है जिसका बोध प्रत्यक्ष के आधार पर हो। ईस्वर के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष के आधार पर कोई भी जानकारी नहीं होती। किसी ने न ईश्वर को देखा है और न किसी ने उसकी आवाज सुनी है। ईस्वर का न किसी ने स्पर्श किया है और न किसी ने उसे सूंघा ही है। अतः ईश्वर की सत्ता में हम विश्वास नहीं कर सकते।

ख. ईश्वर के विषय में अनुमान भी नहीं किया जा सकता

जिस वस्तु का ज्ञान प्रत्यक्ष से नहीं होता उसके विषय में प्रायः अनुमान किया जाता है। ईश्वर के सम्बन्ध में यदि प्रत्यक्ष बोध नहीं होता है तो ईश्वरवादी लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि वह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है, इस जगत की सृष्टि करता है फिर भी इससे परे है। चार्वाक अनुमान को मानता ही नहीं है। इसलिए ईश्वर के विषय में अनुमान करना कोई अर्थ नहीं रखता।

ग. ईश्वर जगत् का कर्ता नहीं

ईश्वरवादी ईश्वर को जगत् का रचयिता मानते हैं क्योंकि ये सृष्टिवाद में विश्वास करते हैं। संसार में हम छोटे–छोपटे कार्यों को किसी न किसी कर्ता के द्वारा होते हुए देखते हैं। इस आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि संसार की रचना जैसे कठिन कार्य के लिए भी किसी न किसी सृष्टिकर्ता की आवश्यकता है और इसकी पूर्ति ईश्वर ही करता है। वह कर्ता है और स्वयंभू है। चार्वाक इस विचार से सहमत नहीं है। इसके अनुसार जगत् की रचना चार भौतिक तत्त्वों से हुई है– वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी। ये तत्त्व स्वयं आपस में मिलते हैं और अलग होते रहते हैं। इन्हें किसी कर्ता की

आवश्यकता नहीं होती। स्वभावतः सब कार्य होते रहते हैं। इस प्रकार चार्वाक मानता है कि जगत् के विकास में ईस्वर की कोई आवश्यकता नहीं है।

घ. संसार की नियमितता एवं सुव्यवस्था भी ईश्वर को प्रमाणित नहीं करती

संसार में व्यवस्था देखी जाती है । नियम से कार्य होते हैं। बीज वपन करने के बाद पौदे का उगना फिर उसमें फूल और फल का लगना। ऐसे ही अन्य भी कार्य होते रहते हैं। तो क्या ये सब बिना किसी व्यवस्थापक के ही होते हैं? ईश्वरवादी कहते हैं ईश्वर के द्वारा ये सभी व्यवस्थाएँ होती हैं। किन्तु चार्वक इन बातों को नहीं मानता। उसके अनुसार प्रकृति का यह स्वभाव है कि उसके अन्दर सभी कार्य इसी प्रकार हो रहे हैं और होते रहेंगे। बीज से पौदे का उगना उसका स्वभाव है। पौधे में फूल और फल का लगना पौधे का स्वभाव है। हवा का बहना, अग्नि का गर्म होना आसि उसका स्वभाव है। इसके लिए किसी नियन्ता की आवश्यकता नहीं है।

ङ. स्वर्ग और मोक्ष में चार्वाक का विश्वास नही

चार्वाक लोक में विश्वास करता है इसलिए इसे लोकायत दर्शन भी कहते हैं। यह स्वर्ग यानी परलोक में विश्वास नहीं करता। परलोक या मोक्ष को वे लोग मानते हैं जो शरीर के नष्ट हो जाने के उपरान्त जीव की गति में विश्वास करते हैं। किन्तु चार्वाक यह मानता है कि शरीर के समाप्त हो जाने पर चेतना समाप्त हो जाती है अर्थात् जीव या आत्मा नष्ट हो जाती है।ेसी स्थिति में मोक्ष या स्वर्ग का प्रश्न ही नहीं उठता।

●